

पंचमोऽध्यायः समास-प्रकरणम्

“समास” शब्द का शाब्दिक अर्थ “समसनम्” है! “समसनम्” संक्षेप को कहते हैं। जब परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो यो दो से अधिक शब्दों को मिलाने पर एक शब्दाकार रूप दिया जाता है तब उस प्रक्रिया को समास कहते हैं। जैसे :-

राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः।

यहाँ “राजपुरुष” का वही अर्थ है जो “राज्ञः पुरुषः” का है। दोनों शब्दों को मिला देने पर “राज्ञः” की विभक्ति - प्रत्यय का लोप लो जाता है।

जब समस्त शब्द को तोड़ कर पहले का रूप दिया जाता है तब उसे विग्रह कहते हैं। विग्रह का अर्थ होता है - “पृथक्-पृथक्” करना। जैसे :-

“सभापण्डितः” - इसका विग्रह होगा - सभायाः पण्डितः।

समास के निम्नलिखित छः भेद हैं :-

- | | |
|-------------------------------|--------------------------|
| 1. अव्ययी भाव | 4. द्विगु (तत्पुरुष-भेद) |
| 2. तत्पुरुष | 5. बहुव्रीहिः |
| 3. कर्मधारय (तत्पुरुष का भेद) | 6. द्वन्द्व |

1. अव्ययीभाव समास

प्रायेण पूर्वपदार्थ प्रधानोऽव्ययीभावः - अव्ययीभाव समास में पहला शब्द अव्यय होता है दूसरा संज्ञा शब्द, दोनों मिलकर अव्यय हो जाते हैं। इन अव्ययीभाव में पूर्व पद का अर्थ प्रधान रहता है। जैसे :-

विष्णोः पश्चात् = “अनुविष्णु” इसमें “विष्णोः” पूर्वपद है यहाँ इसी के अर्थ की प्रधानता है। अर्थ होगा “विष्णु के पश्चात्”।

अव्ययीभाव समास में अव्यय का समास संज्ञा शब्दों के साथ अन्य अर्थों में होता है :-

विग्रहः

समस्तपद

- | | | |
|--------------------------------|-----------------------------|--------------|
| 1. “अधि” का सप्तमी विभक्ति में | = हरी अधि | अधिहरिः |
| | आत्मनि अधि | अध्यात्मम् |
| 2. “समीप” अर्थ में | कृष्णस्य समीपम् | उपकृष्णम् |
| 3. “समृद्धि” अर्थ में | = क्षत्रियाणां समृद्धिः | सुक्षत्रियम् |
| 4. “वृद्धि” अर्थ में | = यवनानां समृद्धिः | समुद्रम् |
| 5. अभाव अर्थ में | = मक्षिकाणाम् अभावः | निर्मक्षिकम् |
| 6. अव्यय (समाप्ति) अर्थ में | = हिमस्य अव्ययः | अतिहिमम् |
| 7. असम्प्रति (अनुचित) अर्थ में | = निद्रा सम्प्रति न युज्यते | अतिनिद्रम् |
| 8. शब्द - प्रादुर्भाव अर्थ में | = हरिः शब्दस्य प्रकाशः | इतिहरिः |
| 9. “पश्चात्” अर्थ में | = विष्णोः पश्चात् | अनुविष्णुः |
| 10. “योग्यता” अर्थ में | = रूपस्य योग्यम् | अनुरूपम् |
| 11. “वीप्सा” अर्थ में | = दिनं-दिनं प्रति | प्रतिदिनम् |
| 12. “अनतिक्रम” अर्थ में | = शक्तिं अनतिक्रम्य | यथाशक्तिः |
| 13. आनुपूर्व्य अर्थ में | = ज्येष्ठस्य आनुपूर्वेण | अनुज्येष्ठम् |
| 14. योगपद्य अर्थ में | = चक्रेण युगपत् | सचक्रम् |
| 15. सादृश्य अर्थ में | = हरेः सादृश्यम् | सहरिः |
| 16. सम्पत्ति अर्थ में | = क्षत्राणां सम्पत्तिः | सक्षत्रम् |

- | | | |
|---------------------|---------------------|-----------|
| 17. साकल्य अर्थ में | = तृणमपि अपरित्यज्य | सतृणम् |
| 18. "तक" अर्थ में | = समुद्रपर्यन्तम् | आसमुद्रम् |

2. तत्पुरुष समास

प्रायेणोत्तर पदार्थ प्रधानस्तत्पुरुष :- जिस समास में उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता हो उसे "तत्पुरुष समास" कहते हैं। जैसे- राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः। इसमें उत्तरवर्ती पद "पुरुषः" है, इसीलिए इसी का अर्थ प्रधान है। तत्तत्पुरुष समास में द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ छिपी रहती हैं।

द्वितीया तत्पुरुष :- जिस समास में उत्तर - पद में श्रित् - आश्रित, अतीत, पतित, गत अत्यस्त और आपन्न विद्यमान हों और पूर्व में द्वितीया विभक्ति हो। जैसे :-

- | | |
|---------------------------|----------------------------------|
| श्रित :- कृष्णम् श्रितः | = कृष्णाश्रितः |
| आश्रित :- रामम् आश्रितः | = रामाश्रितः। |
| अतीत :- कष्टम् अतीतः | = कष्टातीतः। |
| पतित :- तडागं पतितः | = तडागपतितः। |
| गत :- शरणं गतः | = शरणगतः। |
| अत्यस्त :- कूपम् अत्यस्तः | = कूपात्यस्तः (कूप में फँका हुआ) |
| प्राप्त :- सुखं प्राप्तः | = सुखप्राप्तः। |
| आपन्न :- विस्तमयं आपन्नः | = विस्मयापन्नः। |

तृतीया तत्पुरुष :- जिस समास में पूर्वपद में तृतीया विभक्ति हो, वह तृतीया कर्ता या करण ही होनी चाहिए और उत्तर पद में कृदन्त हो। जैसे :-

- | | | |
|---------------------------|-----------------|---------------|
| कृष्णेन हतः, रामेण हतः, | कृष्णेन पालितः, | हारिणा त्रातः |
| कृष्णहतः रामहतः | कृष्णपालितः, | हरित्रातः। |
| नखैः भिन्नः, शरेण बिद्धः, | कुठारेण छिन्नः | वाणेन हतः, |
| नखभिन्नः शरबिद्धः | कुठार छिन्नः | बाणहतः |

चतुर्थी तत्पुरुष :- जिस समास में पूर्वपद में चतुर्थी विभक्ति हो तथा उत्तरपद में तदर्थ, अर्थ, बलि, हित सुख और रक्षित के साथ समास होता हो जैसे :-

- | | |
|-------------------------------|--------------|
| तदर्थ (के लिए) :- यूपाय दारुः | = यूपदारुः |
| अर्थ (प्रयोजन) भोजनाय इदम् | = भोजनार्थम् |
| द्विजाय सूपः | = द्विजसूपः |
| द्विजाय यवम् | = द्विजयवम् |

बलि :- भूतेभ्यः बलिः = भूत बलिः।

हित :- गोभ्यः हितम् = गोहितम्।

रक्षित :- ब्राह्मणेभ्यः रक्षितम् = ब्राह्मणरक्षितम्

पञ्चमी तत्पुरुष :- जिस समास में पूर्वपद में पञ्चमी विभक्ति हो तथा भाववाचक पदों के साथ जहाँ उनका समास होता हो। जैसे :-

- | | | | |
|--------------|----------------|-----------------|----------------|
| [चौराद् भयम् | [सिंहात् भीतिः | [रोगाद् त्रस्तः | [पापात् मुक्तः |
| [चौरभयम् | [सिंहभीतिः | [रोगत्रस्तः | [पापमुक्तः |

षष्ठी तत्पुरुष :- जिस समास के पूर्वपद में षष्ठी विभक्ति हो, जैसे :-

- | | | | |
|----------------|------------------|---------------------|--------------|
| [राज्ञः पुरुषः | [विद्यायाः अर्थी | [विद्यायाः मन्दिरम् | [देवस्य आलयः |
| [राजपुरुषः | [विद्यार्थी | [विद्यामन्दिरम् | [देवालयः |

सप्तमी तत्पुरुष :- जिस समास के पूर्वपद में सप्तमी विभक्ति हो तथा उसका समास "शौण्डादि" के साथ हो। जैसे :-

- | | | | |
|-----------------|------------|--------------|---------------|
| [अक्षेषु शौण्डः | [जले मग्नः | [अध्ययने रतः | [कार्ये दक्षः |
| [अक्षशौण्डः | [जलमग्नः | [अध्ययनरतः | [कार्यदक्षः |

3. कर्मधारय (तत्पुरुष भेद) :- उपमेय और उपमान का, विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे :-

घन इवश्यामः	पुरुषः व्याघ्र इव	कृष्णः सर्पः	नीलम्-उत्पलम्
घनश्यामः	पुरुषव्याघ्रः	कृष्णसर्पः	नीलोत्पलम्
चन्द्र इव मुखम्	नयनं कमलमिव	कुत्सितः पुरुषः	महान् देवः
चन्द्रमुखम्	नयनकमलम्	कुपुरुषः	महादेवः

4. द्विगु (तत्पुरुष भेद) :- संख्यावाची शब्द का समाहार (समूह) के अर्थ में जहाँ समास होता है। जैसे :-

पञ्चानां गवां समाहार :- पञ्चगवम्, त्रयाणां लोकानां समाहार :- त्रिलोकी।
त्रयाणां भुवनानां समाहार :- त्रिभुवनम्। द्वयोः अंगुल्योः समाहार :- द्वयंगुलम्।

अन्य तत्पुरुष भेद

(क) नञ् - समास :- जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में “न” का समास उत्तरपद के साथ किया जाता हो उसे “नञ्” समास कहते हैं। यह दो तरह का होता है। व्यञ्जन पूर्व पद, उत्तरपद और स्वरपूर्व उत्तरपद।

1. व्यञ्जनपूर्व उत्तर पद :- यदि “न” के आगे व्यञ्जन पूर्व उत्तर पद हो तो “न” को “अ” में परिवर्तित किया जाता है। जैसे :-

न हिंसा	न धर्मः	न विद्या	न भावः
अहिंसा	अधर्मः	अविद्या	अभावः

2. स्वर पूर्व उत्तर पद :- यदि “न” के आगे स्वरपूर्व उत्तरपद हो तो “न” को “अन्” में परिवर्तित किया जाता है। जैसे :-

न अश्वः	न ईश्वरः	न आवश्यकम्
अनश्वः	अनीश्वरः	अनावश्यकम्

(ख) उपपद समास :- जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में किसी संज्ञा या अव्यय के रहने पर धातु से “कृत्” प्रत्यय होता है तब उसे “उपपद” कहते हैं। उस उपपद के साथ उत्तरपद के समास को उपपद कहते हैं। जैसे :-

कुम्भं करोतीति	सामम् गायतीति	जलम् ददातीति	उच्चैः कृत्वा
कुम्भकारः	सामगः	जलदः	उच्चैः कृत्य

(ग) अलुक् तत्पुरुष :- जिस तत्पुरुष समास में मध्य की विभक्ति का लोप न होता हो। जैसे :- आत्मनेपदम्, परस्मैपदम्, पश्यतोहरः (सुनार), युधिष्ठिरः, अन्तेवासी, सरसिजम्, खेचरः (पक्षी)।

5. बहुव्रीहि : समास

अन्य पदार्थ प्रधानो बहु व्रीहि :- जिस समास में अन्य पदार्थ की प्रधानता हो उसे “बहुव्रीहि” समास कहते हैं। अर्थात् पदों के समस्त हो जाने पर जहाँ अन्य अर्थ का बोध होता है। जैसे :-

पीतानि - अम्बराणि यस्य सः पीताम्बरो हरिः।

यहाँ पर समस्त पद विशेषण की तरह काम करते हैं।

बहुव्रीहि समास के चार भेद होते हैं :-

1. समानाधिकरण, 2. व्यधिकरण, 3. तुल्ययोग, 4. व्यतिहार।

1. समानाधिकरण :- जहाँ पूर्वपद और उत्तरपद में समान विभक्ति हो। जैसे :-

महान् आशयो यस्य सः = महाशयः।

जितानि इन्द्रियाणि येन सः = जितेन्द्रियः।

निर्गतं धनम् यस्मात् सः = निर्धनः।

पतितं पर्णं यस्मात् सः = पतितपर्णः।

वीराः पुरुषाः यस्मिन् सः = वीर पुरुष (कः)।

2. व्यधिकरम :-

यहाँ सभी पद भिन्न-भिन्न विभक्तियों वाले होते हों। जैसे :-

चक्रं पाणौ यस्य सः चक्रपाणिः।

कुम्भात् जन्म यस्य सः = कुम्भजन्मा।

चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः।

3. तुल्ययोग :-

जहाँ “सः” अव्यय के साथ तृतीयान्त पद के साथ समास होता हो और

“सह” को “स” हो जाता है। जैसे :-

अनुजेन सह

पुत्रेण सहागतः पिता विनयेन सह

आदरेण सह

सानुजः

सपुत्रः

सविनयम्

सादरम्

4. व्यतिहार :-

जहाँ तृतीयान्त और सप्तम्यन्त शब्दों का समास होता हो तथा परस्पर आरम्भ हुए युद्ध का द्योतक हो। जैसे :-

केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् = “केशाकेशिः”।

दण्डैश्च दण्डैश्च गृहीत्वेदं युद्धं प्रवृत्तम् = दण्डादण्डिः।

नोट :- समस्तपद का पूर्वपद यदि पुलिङ्ग से बना स्त्रीलिङ्ग हो तो समास हो जाने पर उसे पुंलिङ्ग हो जाता है। जैसे :-

रूपवती भार्या यस्य सः = रूपवद्भार्याः

6. द्वन्द्व - समास

उभयपदार्थ प्रधानो द्वन्द्व :- जिस समास में दोनों पदों के अर्थ की प्रधानता हो उसे “द्वन्द्व” समास कहते हैं। जब दो या दो से अधिक संज्ञाएँ इस तरह जुड़ी रहती हैं उनके मध्य “च” छिपा रहे तब “द्वन्द्व” समास होता है। जैसे :-

कृष्णश्च अर्जुनश्च = कृष्णार्जुनौ

यह द्वन्द्व समास प्रधानतया तीन प्रकार का होता है :-

1. इतरेतरद्वन्द्व, 2. समहारद्वन्द्व, 3. एकशेषद्वन्द्व।

1. इतरेतरद्वन्द्व :- इस समास में दो पदों के समास के साथ द्विवचन और दो से अधिक पदों के समास के साथ बहुवचन आता है। इसमें लिङ्ग का विधान अन्तिम पद के लिङ्ग के अनुसार होता है। जैसे :-

माता च पिता च = मातापितरौ

कन्दज्व मूलं च फलज्व = कन्दमूलफलानि।

कुक्कुटश्च मयूरी च = कुक्कुटमयूरी।

2. समाहारद्वन्द्व :- इस समास में समाहार (समूह) का बोध होता है। समस्त पद में नपुंसकलिङ्ग का एकवचन आता है। जैसे :-

पाणी च पादौ च एतेषां समाहारः = पाणिपादम्।

दधि च घृतं च अनयोः समाहारः = दधिघृतम्।

अहश्च रात्रिश्च = अहोरात्रम्।

गौश्च महिषी च = गोमहिषम्।

3. एकशेष द्वन्द्व :- इस समास में अनेक समानाकार पदों में ही एक ही पद शेष रह जाता है और अर्थ के अनुसार वचन का प्रयोग होता है। जैसे :-

माता च पिता च = पितरौ।

पुत्रश्च पुत्री च = पुत्रौ।

स च स च = तौ।

रामश्च रामश्च = रामौ।

